srijan सृजन

Self-Reliant Initiatives through Joint Action

रबी फसलों के प्रमुख कीट एवं रोग तथा उनके रोकथाम और नियंत्रण के उपाय

srijan सृजन

Self-Reliant Initiatives through Joint Action

गेंहूँ फसल के प्रमुख कीट

दीमक (Termite)

माहूँ (Aphids)

कटुआ इल्ली (Cutworm)

गुलाबी तनाछेदक कीट (Pink Stem Borer)

प्रबंधन

रोकथाम एवं नियंत्रण के उपाय

खेतों की ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई

कीटों के प्रति सहनशील उन्नत किस्में

बीजामृत /नीमास्त्र से बीज उपचार

पकी हुई गोबर की खाद अथवा घनजीवामृत का प्रयोग

सही समय पर सिंचाई और खेत में अधिक पानी भरनें से बचना

एक एकड़ के खेत में चार पीले चिपचिपे प्रपंच लगाना

प्रकाश प्रपंच का उपयोग

दीमक के नियंत्रण के लिए मटकी विधि का प्रयोग

एक एकड़ फसल में पहली सिंचाई के समय सिंचाई जल के साथ 200 लीटर नीमास्त्र का प्रयोग

जहॉ दीमक का अधिक प्रकोप हो तो गोबर की खाद अथवा घनजीवामृत में 1 किलोग्राम बिवेरिया बेसियाना चूर्ण को मिलाए

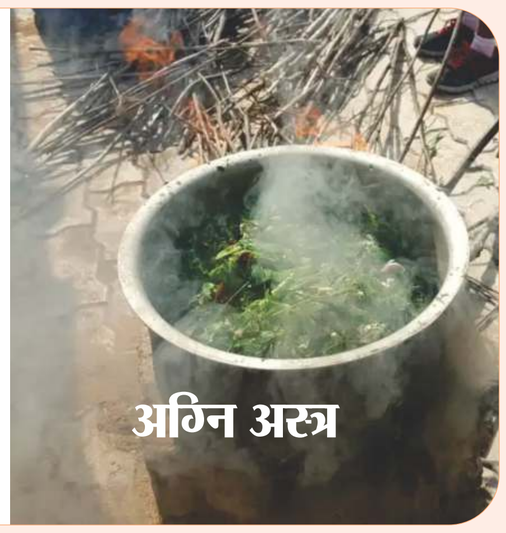

कटुआ इल्ली एवं गुलाबी तनाछेदक के लिए 7 दिन पुरानें छाछ अथवा अधिक प्रकोप की स्थिति में अग्नेयास्त्र का 250 मिलीलीटर प्रति 10 लीटर पानी की दर से घोल बनाकर 7 दिन के अंतर से 2 बार छिड़काव

srijan सृजन

Self-Reliant Initiatives through Joint Action

गेंहूँ फसल के प्रमुख रोग

रतुआ/किट्ट रोग (Rust Disease)

कंडवा रोग (Smut Disease)

करनाल बंट रोग (Karnal Bunt Disease)

चूर्णिल आसिता/फफूँदी रोग
(Powdery Mildew Disease)

प्रबंधन

रोकथाम एवं नियंत्रण के उपाय

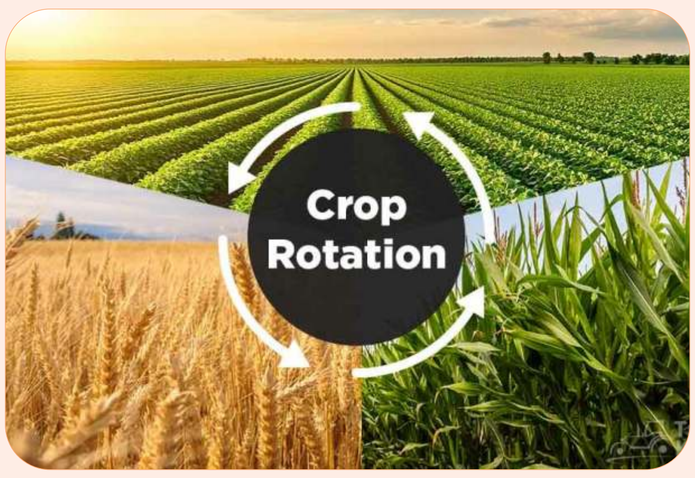

फसल चक्र (Crop Rotation): एक ही फसल को बार-बार न बोएँ। इससे मृदा में रोगजनक सूक्ष्मजीवों की वृद्धि रुकती है।

स्वस्थ बीज का उपयोग (Use of Healthy Seeds): स्वस्थ एवं रोगमुक्त बीजों का उपयोग करें

बीजोपचार (Seed Treatment): बुवाई से पूर्व बीजामृत तथा नीमास्त्र के घोल के साथ ट्रायकोडर्मा पावडर (5-10 ग्राम पावडर प्रति कि.ग्रा. बीज) से भी उपचारित करें

मिट्टी का उपचार (Soil Treatment): घनजीवामृत को खेत में डालनें से एक दिन पूर्व 200 ग्राम ट्रायकोडर्मा पावडर प्रति क्विंटल घनजीवामृत की दर से मिलाकर उपयोग करें

सिंचाई प्रबंधन (Irrigation Management): उचित समय एवं मात्रा में सिंचाई जल दे खेत में अधिक मात्रा में पानी नही भरने दे।

फसल उपचार (Crop Treatment): फसल पर रोगों के लक्षण दिखनें पर रोगग्रस्त पौधे को उखाड़कर नष्टकर दे तथा ट्राइकोडर्मा विरिडे अथवा ट्राइकोडर्मा हार्जियानम दवा का 5-10 ग्रा. पावडर प्रति ली. पानी की दर से घोल को छिड़के

srijan सृजन
Self-Reliant Initiatives through Joint Action

चना फसल के प्रमुख कीट

फलीछेदक इल्ली एवं उसका मुख्य कीट (Pod Borer Caterpillar & its Adult)

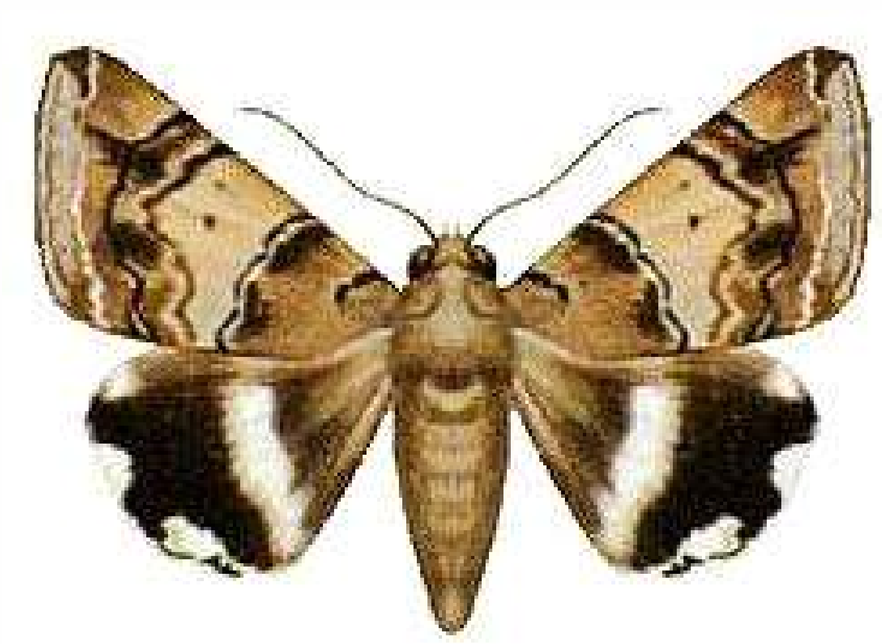

अर्धकुंडलक इल्ली एवं उसका मुख्य कीट (Semilooper caterpillar & its Adult)

कटुआ इल्ली एवं उसका मुख्य कीट
(Cutworm & its Adult)

दीमक (Termite)

प्रबंधन

रोकथाम एवं नियंत्रण के उपाय

खेतों की ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई

कीटों के प्रति सहनशील उन्नत किस्में

बीजामृत /नीमास्त्र बीज से उपचार

पकी हुई गोबर की खाद अथवा घनजीवामृत का प्रयोग

सही समय पर सिंचाई और खेत में अधिक पानी भरनें से बचना

एक एकड़ के खेत में एक प्रकाश प्रपंच लगाना

फेरोमेन ट्रेप का उपयोग

दीमक के नियंत्रण के लिए मटकी विधि का प्रयोग

एक एकड़ फसल में पहली सिंचाई के समय सिंचाई जल के साथ 200 लीटर नीमास्त्र का प्रयोग

जहॉ दीमक का अधिक प्रकोप हो तो गोबर की खाद अथवा घनजीवामृत में 1 किलोग्राम बिवेरिया बेसियाना चूर्ण को मिलाए

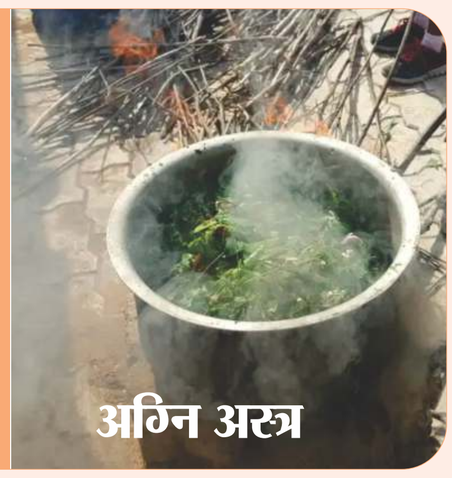

कटुआ इल्ली एवं गुलाबी तनाछेदक के लिए 7 दिन पुरानें छाछ अथवा अधिक प्रकोप की स्थिति में अग्नेयास्त्र का 250 मिलीलीटर प्रति 10 लीटर पानी की दर से घोल बनाकर 7 दिन के अंतर से 2 बार छिड़काव

Self-Reliant Initiatives through Joint Action

चना फसल के प्रमुख रोग

आर्द्रगलन रोग (Damping off)	उकठा रोग (Wilt disease)

झुलसा रोग (Ascochyta blight)	तना एवं जड़ सड़न (Collar and root rot)

प्रबंधन

रोकथाम एवं नियंत्रण के उपाय

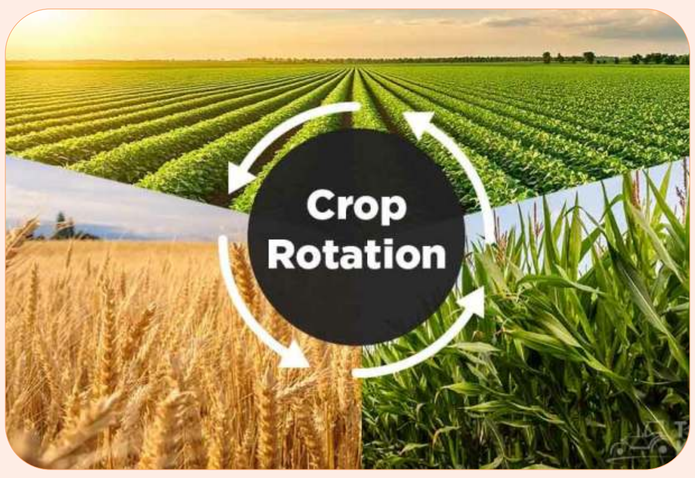

फसल चक्र (Crop Rotation):
एक ही फसल को बार-बार न बोएँ। इससे मृदा में रोगजनक सूक्ष्मजीवों की वृद्धि रुकती है।

उन्नतशील किस्मों का चयन (Selection of Improved Varieties):
बुवाई के लिए उन्नतशील रोगरोधी / सहनशील किस्मों का चयन करना चाहिए।

समय पर बुवाई:
चना फसल की समय पर बुवाई का बहुत महत्व है। चनें की बुवाई का सही समय 15 अक्टूबर से 15 नवम्बर के मध्य करें

बीजोपचार (Seed Treatment): बीज को बुवाई से पूर्व बीजामृत तथा नीमास्त्र के घोल के साथ ट्रायकोडर्मा पावडर (5-10 ग्राम पावडर प्रति कि.ग्रा. बीज) से भी उपचारित करें

मिट्टी का उपचार (Soil Treatment): घनजीवामृत को खेत में डालनें से एक दिन पूर्व 200 ग्राम ट्रायकोडर्मा पावडर प्रति क्विंटल घनजीवामृत की दर से मिलाकर उपयोग करें

नमी प्रबंधन (Moisture Management): चनें की बुवाई करते समय मिट्टी में उचित नमी होना चाहिए कम नमी की स्थिति में उकठा रोग तथा अधिक नमी की स्थिति में आर्द्रगलन रोग आनें की संभावना रहती है। सिंचाई की ब्यवस्था होने पर उचित समय एवं मात्रा में सिंचाई करें। खेत में अधिक मात्रा में पानी नही भरना चाहिए।

फसल उपचार (Crop Treatment): फसल पर रोगों के लक्षण दिखनें पर रोगग्रस्त पौधे को उखाड़कर नष्टकर दे तथा ट्राइकोडर्मा विरिडे अथवा ट्राइकोडर्मा हार्जियानम दवा का 5-10 ग्रा. पावडर प्रति ली. पानी की दर से घोल को छिड़काव करें ।

Self-Reliant Initiatives through Joint Action

सरसों फसल के प्रमुख कीट

चेंपा/माहूँ/अल कीट (Aphids)

आरामक्खी (Sawfly)

चितकबरा/धौलिया कीट (Painted Bug)

प्रबंधन

रोकथाम एवं नियंत्रण के उपाय

खेतों की ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई

कीटों के प्रति सहनशील उन्नत किस्में

बीजामृत /नीमास्त्र से बीज उपचार

पकी हुई गोबर की खाद अथवा घनजीवामृत का प्रयोग

सही समय पर सिंचाई और खेत में अधिक पानी भरनें से बचना

प्रकाश प्रपंच का उपयोग

एक एकड़ के खेत में चार पीले चिपचिपे प्रपंच लगाना

एक एकड़ फसल में पहली सिंचाई के समय सिंचाई जल के साथ 200 लीटर नीमास्त्र का प्रयोग

माहूँ के नियंत्रण के लिए 1500 पी.पी.एम. के नीम तेल का 5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी की दर से अथवा ब्रम्हास्त्र का 250 मिलीलीटर प्रति 10 लीटर पानी की दर से घोल बनाकर 7 दिन के अंतर से दो बार छिड़काव

कटुआ इल्ली एवं गुलाबी तनाछेदक के लिए 7 दिन पुरानें छाछ अथवा अधिक प्रकोप की स्थिति में अग्नेयास्त्र का 250 मिलीलीटर प्रति 10 लीटर पानी की दर से घोल बनाकर 7 दिन के अंतर से 2 बार छिड़काव

सरसों फसल के प्रमुख रोग

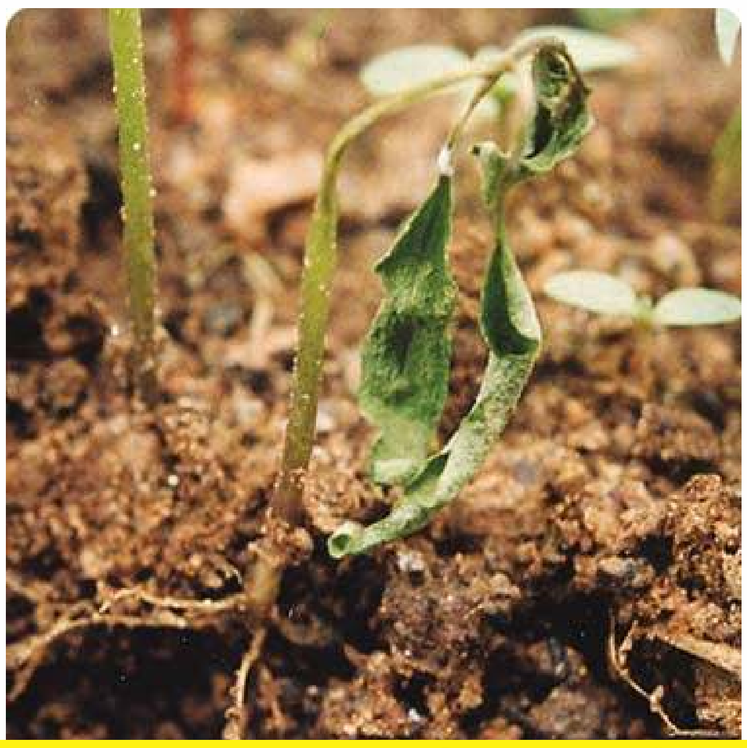

पौध आर्द्र–गलन रोग (Damping off Disease)

पत्ती धब्बा/अंगमारी रोग (Alterneria Blight Disease)

सफेद रतुआ/रोली/भभूतिया रोग (White Rust Disease)

तना गलन/सड़न रोग
(Sclerotinia Stem Rot Disease)

कोमल फफूँद/छाछ्या रोग
(Downy Mildew Disease)

प्रबंधन

रोकथाम एवं नियंत्रण के उपाय

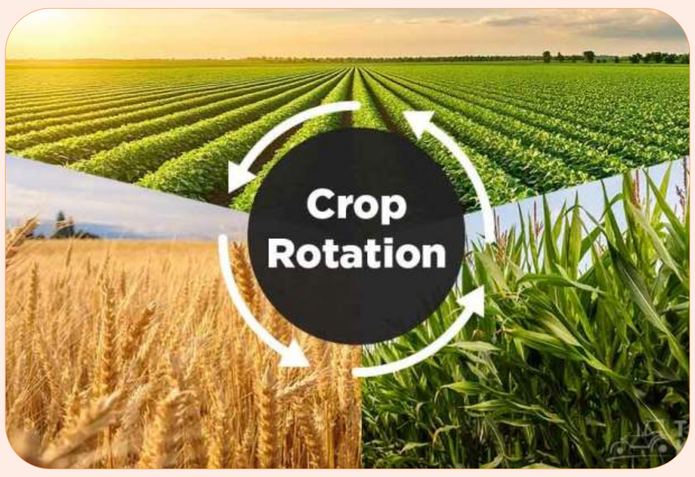

फसल चक्र (Crop Rotation): एक ही फसल को बार-बार न बोएँ। इससे मृदा में रोगजनक सूक्ष्मजीवों की वृद्धि रुकती है।

उन्नतशील किस्मों का चयन (Selection of Improved Varieties): बुवाई के लिए उन्नतशील रोगरोधी / सहनशील किस्मों का चयन करें।

समय पर बुवाई (Sowing on Time): सरसों फसल की समय पर बुवाई का बहुत महत्व है। सरसों की बुवाई का सही समय 15 अक्टूबर से 15 नवम्बर के मध्य करना सही रहता है।

स्वस्थ बीज का उपयोग (Use of Healthy Seeds): स्वस्थ एवं रोगमुक्त बीजों को प्राप्त करके उपयोग करें

बीजोपचार (Seed Treatment): बीज को बुवाई से पूर्व बीजामृत तथा नीमास्त्र के घोल के साथ ट्रायकोडर्मा पावडर (5-10 ग्राम पावडर प्रति कि.ग्रा. बीज) से भी उपचारित करें

मिट्टी का उपचार (Soil Treatment): घनजीवामृत को खेत में डालनें से एक दिन पूर्व 200 ग्राम ट्रायकोडर्मा पावडर प्रति क्विंटल घनजीवामृत की दर से मिलाकर उपयोग करें यह आर्द्रगलन एवं तना गलन रोग के लिए उपयोग है।

नमी प्रबंधन (Moisture Management): सरसों की बुवाई करते समय मिट्टी में उचित नमी होना चाहिए कम नमी की स्थिति में उकठा रोग तथा अधिक नमी की स्थिति में आर्द्रगलन एवं तना गलन रोग आनें की संभावना रहती है। सिंचाई की ब्यवस्था होने उचित समय एवं मात्रा में सिंचाई करना चाहिए। खेत में अधिक मात्रा में पानी नही भरना चाहिए।

फसल उपचार (Crop Treatment): खड़ी फसल पर रोगों के लक्षण दिखनें पर रोगग्रस्त पौधे को उखाड़कर नष्टकर देना चाहिए तथा ट्राइकोडर्मा विरिडे अथवा ट्राइकोडर्मा हार्जियानम दवा का 5-10 ग्राम पावडर प्रति ली. पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें